श्रम विभाग

ग्रादे ग

दिनांक 8 जनवरी, 1987

सं श्री वि०/सोनीपत/149-86/767.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अरदार मंहदर्गेन्द्र इण्टस्ट्रीज, जी टीं रोड़ कुण्डली, मोनीपत, के श्रीमक श्री मलेमाल, मार्फत ग्राल इण्डिता जनरात कामगार युनियन (रिजि) कार्यों जी टीं रोड प्याऊ मनियारी कुण्डली, मोनीपत तथा उसके अवन्त्रकों के मध्य उसमें इसके यद जिख्ति मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रीर चं कि हरियाणा है राज्यपाल इस विचाद हो त्यावनिर्णय हैन् निर्दिश्ट हरना बाछनीय समझते हैं ,

इसलिये. अब. ऑडोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारी 10 की उपधारः (1) वे खण्ड (म) द्वारा प्रदान की वर्ष पिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपत इसके द्वारा सरकारी अधिमुचना सं० 9641-1-अम 78/32573, दिनांक 6 नक्यरं, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिमुचना की घारा 7 के अधीन गठित अमन्यायालय, रोहतक, जो विवादग्रस्त या उसमें सुसंगत या उसमें सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीक मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं भी कि उक्त प्रबन्धकों तथा असक के बीच या नी विवादग्रस्त मामला है या उसने विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित है :---

क्या श्री मुलोमान की सेपाओं का समापन न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत है। हिकदार है ?

सं० ग्रों विद्िहिमार्/8-84/774.--चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राध है कि मैं० दो हिनार डिस्ट्रस्ट नैस्ट्रव कोपरेटीय बैंक लि०, हिमार, के श्रमिक श्री श्रोम प्रकास, पुब श्री रिसाक सिंह गांध व डाल मिलकपुर, वह० हामी, जिला हिमार, तथा उसके प्रबन्धवों के मध्य इस में डमके बाद लिखित मामले में कोई श्रीखोगिक दिवाद है:

ग्रीर जुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निविद्ध करना बांछनीय समजते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रीटॉगिक विवाद ग्रिशिनथम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्ड शिक्तयों का प्रयोग करते हुँये हिस्साणा के राज्यपाल इस के द्वारा मरकारी ग्रीधमुखना मं. 96-11-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 न वस्तर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रीधस्थना की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतल, को विवादग्रस्त वा एससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद नीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट हरते हैं जो कि उनस प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्तविचाद में सुसंगत अथवा सम्बन्धित हैं :—

क्या श्री स्रोम प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं० भ्रो०वि०/एफ०डी०/192-86/781.—चूंकि हरियाणा के राज्यपान की राय है कि मै० ग्राईगर गुडर्थ नि०, 59 ए न० ग्राई० टी०, फरीदाबाद के श्रीमक श्री जीत राम, पुत्र श्री श्रीचन्द, गांव सेडपुरा, डा० मोहना, जिला फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इन विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीचोगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्द शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के डारा सरकारी ग्रीधिसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के माथ पढ़ते हुए ग्रीधिसूचना सं 11495-जी-श्रम 57/11245 दिनांक 7 फरघरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रीधिसूचना, की बारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हैतू निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिश्च है दीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला- है :---

क्या श्री जीत राम की सैवाओं ฮा समापन न्यागीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस सहत का ह∵दार है ?